JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

स्त्री विमर्श के प्रश्न

रवि कान्त पटेल
शोधार्थी
हिन्दी अध्ययन शाला एवं शोध केन्द्र
महाराजा छत्रसाल बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, छतरपुर(म.प्र.)

शोध सार

स्त्री विमर्श में महिलाओं को केन्द्र में रखकर उनकी जागृति और अधिकार को महत्व दिया जाता है। स्त्रियाँ जो पहले से पीड़ित और शोषित थी, वे अपने आपको व्यक्त कर रही है। समाज को सच्चाई से अवगत करा रही है। स्त्री विमर्श आज बहुत व्यापक क्षेत्र में आ चुका है। सती प्रथा, बाल विवाह, विधवा विवाह से शुरू होकर स्त्री विमर्श आज पुरूष के समकक्ष समान अवसर, समान नौकरी, समान वेतन, यौन स्वतंत्रता, घरेलू कामकाज में स्त्री–पुरूष के बराबर योगदान पर पहुंच चुका है। स्त्री विमर्श को सफल बनाने के लिए भारतीय समाज के ढाँच में सुधार करने की जरूरत है।

बीज शब्द :– पितृसत्तात्मक, असमानता, अधिकार, चेतना, समाज , विचारधारा , संस्कार, साझेदारी ।

प्रस्तावना

स्त्री विमर्श आधुनिक युग की देन है, लेकिन इसका महत्व इतिहास में भी बराबर रहा है। सबसे पहला प्रश्न उठता है कि स्त्री विमर्श क्या है ?

प्रभा खेतान कि अनुसार – "नारीवाद न मार्क्सवाद है और न पूँजीवाद स्त्री हर जगह है। हर वाद में है फैलाव में है मगर संस्कृति कि विस्तृत फलक पर आज भी वह वस्तुकरण की इस पारंपरिक प्रक्रिया को पुरूष दृष्टि से देखने और समझने की जरूरत है।"[1] स्त्री विमर्श पितृसत्तामक सोच को हटाकर स्त्री और पुरूष को समानता के रूप में देखता है।

उद्देश्य

स्त्री विमर्श का मुद्दा आज के समय में बहुत महत्वपूर्ण है, स्त्री विमर्श के प्रश्न में बहुत से नये आयाम जोड़े गये है, स्त्री मुक्ति जिसमें एक महत्वपूर्ण प्रश्न है, स्त्रियों ने अपनी आवाज उठायी है। और उन पर प्रश्न चिन्ह लगायें है। जो केवल रूढ़ि रही है, उनका कोई औचित्य हमारे समाज में नही रहा उनको तर्क की कसौटी पर कसा है ।

स्त्री अस्मिता के प्रश्न में स्त्री जीवन के विविध पहलुओं राजनीति, परिवार, समाज, धर्म, राष्ट्र और संस्कृति, अर्थव्यवस्था में उनकी सीमा का पुनःनिर्धारण की वकालत की जानी चाहिए। जो आज नारी की स्थिति है। उसका कारण उनकी जैविक क्षमताओं से नही बल्कि समाज की संस्कृति, विचारधारा से है। जिसमें स्त्रियों को कमतर आँका गया है। स्वतंत्रता आंदोलन में भी महिलाओं ने बढ़ चढ़कर भाग लिया है। जिसमें सरोजनी नायडू का नाम प्रमुख है। भारतीय संविधान सभा में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण रही है।

मीराबाई भी झूठी मान मर्यादा को नही मानती थी।

"लोकलाज कुल मानि जगत की
दादू बहाय जस पानी
अपने घर का परदा कर ले
मै अबला बैरानी"[2]

मीराबाई ने पर्दा प्रथा पर गहरी चोट की है। यदि परदा करना है तो अपने घर को ढक लो मै तो बौरानी हूँ, मुझे पर्दा नही करना है। यह नारी का प्रथम अभिव्यक्ति है जो पर्दा प्रथा पर है। आज भी यह हमारे समाज में है। महिलाओं को बचपन से ही भेदभाव सहन करना होता है।

स्त्री की मुक्ति के लिए वैश्विक और भारतीय स्तर पर अनेक सामाजिक परिवर्तन और आंदोलन हुए। जिससे महिलाओं में जागृति आई सबसे पहले शिक्षा की जरूरत है। शिक्षा के द्वारा स्त्रियों को उनके महत्व के बारे में पता चला और वह अपने लिए हो रही असमानता को एक आवाज दे सकती है। कुछ स्त्रियों ने साहित्य लेखन कर महिलाओं के बारे लिखा और समाज की सच्चाई दिखाई जिससे स्त्री विमर्श को एक हवा मिली और उनसे लोगों की विचारधारा में बदलाव आया ।

स्त्री विमर्श का मुख्य मुद्दा लिंग ही रहा है। स्त्रियों को अपने लिंग के कारण यह सब असमानता और अधिकारों से वचिंत रहना पड़ा। सीमोन द वोउवार कहती है– "स्त्री पैदा नहीं होती बनाई जाती है"। "स्त्री पुरूष प्रधान समाज की कृति है। वह जन्म से ही अनेक नियमों के ढाँचे में ढालता चला गया।"[3]

स्त्री विमर्श का उद्देश्य महिलाओं में चेतना, आत्मविश्वास और साहस पैदा करना है! जिससे महिलायें अपने आप को समझ सके और अपनी बात को बखूबी रख सके और अपने अधिकारों की माँग कर सके। समाज, परिवार उन्हें कहाँ–कहाँ छल रहा है। उसका पता लगा सके ओर उसका प्रत्युत्तर दे सके। मानसिक रूप से सुदृढ़ हो स्त्री अपने भीतर सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक परिवर्तन ला सके।

स्त्री विमर्श ने हजारों वर्षों से चले आ रहे पितृसत्तामक समाज के सिद्धांतों को चुनौती दी है, और वे सिद्धांत पुरूष समाज द्वारा निर्मित थे। स्त्री विमर्श ने ही पितृसत्तामक सिद्धांतों में निहित उन प्रचंड अन्तर्विरोधों विरोधाभासों को सामने रखा है। जो स्त्री विरोधी थे। "पुरूष कभी भी स्त्री विमर्श को खुले मन से स्वीकृति नहीं देता सीमोन द वोउवार, बैटी करीडन, जूडिथ बदार, जूलिया क्रिस्टिवा, गायत्री चक्रवर्ती, स्वीपवाक आदि स्त्री लिखिकाओं ने उस पितष्क साहित्य–शास्त्र सिद्धांतों में इन अन्तर्विरोधों को सामने रखा है तथा पितृसत्तामक सिद्धांतो में निहित विरोधाभासों को तोड़ते हुए स्त्री विमर्श को प्रासंगिक बनाया हैं।"[4]

स्त्री विमर्श की जो वर्तमान स्थिति है। उसकी शुरूआत पश्चिम के नारी मुक्ति आन्दोलन से सम्बन्धित है, सन् 1920 में समान अधिकार के मुद्दे को लेकर जो आंदोलन हुआ बाद में नौकरी के क्षेत्र में, घरेलू कार्यकलापों में, कानून संबंधों में और सांस्कृतिक प्रथाओं के साथ–साथ मूलभूत लैंगिक समानता के एक आमूल परिवर्तनकारी आन्दोलन के रूप में उभरकर आया है।

"जब तक नारी केवल नारी है, व्यक्ति नहीं तब तक वह पुरूष की दासता के लिए अभिशप्त है।"[5] यह काम स्त्री विमर्श का है कि स्त्री को कैसे व्यक्ति बनना है। "जिस दिन समाज स्त्री शरीर का नही, उसकी मेधा और श्रम मूल्य देना सीख जायेगा सिर्फ उस दिन स्त्री मनुष्य के रूप में स्वीकृत होगी।"[6]

साहित्य समाज का दर्पण होता है। लेकिन जब साहित्य के द्वारा समाज में सकारात्मक बदलाव होने लगे तब साहित्य का उद्देश्य पूरा होता है। भारत में स्त्री विमर्श के प्रभाव में है और भारत में स्त्री जागरण का काल 19 वीं शताब्दी नवजागरण आन्दोलन से शुरू हुआ जिसमें सती प्रथा, बालविवाह, बहुपत्नी प्रथा, पर्दाप्रथा, अशिक्षा, कन्या वध जैसी समस्याओं पर ध्यान केन्द्रित किया। जिसमें ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, राजा राममोहन राय, स्वामी विवेकानन्द आदि ने शुरूआत की थी।

नारी विमर्श पर आधुनिक साहित्य में बहुत लिखा गया है। जिसमें स्त्री लेखिकाओं ने बहुत सारे प्रश्न उठाए है। उन पर समाज को विचार करना होगा।

चित्रामुद्रगल जी अपने उपन्यास 'एक जमीन अपनी' में कहती है। "नारी अधिकार या स्त्री मुक्ति से आशय मानव माने जाने की आकांक्षा है। अतः नारी को केवल एक वस्तु की तरह न देखकर एक जीवित प्राणी समझा जाए और उसकी भावनाओं का ख्याल रखा जाए।"[7]

"लड़की समाज में इसीलिए उपेक्षित शोषित रही है, क्योंकि अपने घर में मात्र कर्त्तव्य होती है... कर्त्तव्य से उऋण हो उसे पराया मान लिया जाता है।"[8] हमारे समाज की सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि विवाह में लड़की का कन्यादान किया जाता है और कुछ दहेज देकर लड़की को हमेशा के लिए घर और जायदाद से पराया मान लिया जाता है। फिर वह हमेशा के लिए पति और ससुराल पर आश्रित हो जाती है और उसका शोषण हो सकता है। सरकार ने इसके लिए कानून बनाए है। लेकिन धरातल पर यह कितना कारगर है। यह कहना कठिन है और आगे वह कहती है। "मैं वैवाहिक व्यवस्था को दो व्यक्तियों के साहचर्य और आत्मसम्मान पूर्ण साझेदारी के रूप में देखती हूँ।"[9]

स्त्री विमर्श का बहुत बड़ा प्रश्न यह है ? कि विवाह संस्था में दोनों की बराबर साझेदारी रहे जिससे दोनों को निर्णण लेने का बराबर अधिकार हो। ऐसा न हो कि एक के विचार दूसरे पर थोपे जाए चाहे वो गलत हों या सही हों यदि निर्णय विचार विमर्श के बाद हो तो ज्यादा अच्छा निर्णय ही लिया जायेगा। स्त्री लेखिका अनामिका अपने उपन्यास 'अवांतर कथा' में लिखती है। "कितनी भी तेज भूख हो सबसे सामने हड़बड़ा के मत खाना कुड़–कुड़ी चीज मिले तो उसे दाल में डुबोकर ... खाना नही तो सब हँस पड़ेगे।"[10]

यह बात 'नन्ना' कि विदाई के समय की है जब उसे समझाया जाता है, कि कैसे ससुराल में भूख भी लगे तो नही खाना जब तक कोई बोले न। यह भी एक तरह की घुटन है। जिसमें स्त्री को अपने ही घर में खाने की स्वतंत्रता नही है। और स्त्री को बासी रोटी खाने को मिले जो बच गयी थी। यह भी एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। जिसका समाज पर ध्यान नही जाता है। उसे केवल लज्जा, शर्म और मान–मर्यादा का पालन करना होता है।

निष्कर्ष

समाज में स्त्री और पुरूष एक गाड़ी के दो पहिये है, जब दोनों ठीक और बराबरी पर चलेंगे तभी समाज की तरक्की होगी । स्त्री विमर्श स्त्रियों को उपेक्षित से सशक्तिकरण की तरफ ले जाने का काम कर रहा है। स्त्री विमर्श के प्रश्नो ने समाज को नई विचारधारा से सोचने के आयाम दिये है । जिससे समाज में एक नई ऊर्जा आयेगी जो केवल समानता पर आधारित होगी। स्त्री विमर्श में समय के साथ नये प्रश्न जुड़ते जा रहे है, उनकों हल करना हमारा दायित्व है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. हंस अक्टूबर 1996 पृष्ठ. सं.76
2. मीरा बाई पदावली, परशुराम चतुर्वेदी पृष्ठ. सं. 76
3. सीमोन द वोउवार, स्त्री उपेक्षिता पृष्ठ. सं.212
4. कुमार राकेश, नारीवादी विमर्श, पंचकूला (हरियाणा), आधार प्रकाशन संस्करण 2004 पृष्ठ. सं.75
5. रजवार डॉ. शीला,स्वतंत्र्योत्तर कथा साहित्य मे नारी के बदलते संदर्भ, दिल्ली इस्टर्न बुक लिंकर्स पृष्ठ. सं.74
6. नसरीन तसलीमा, औरत के हकमें, दिल्ली, वाणी प्रकाशन संस्करण 1993 पृष्ठ. सं.99
7. डॉ. शशिकला त्रिपाठी, उत्तरशती के उपन्यासों में स्त्री, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, प्रथम संस्करण 2006 पृष्ठ. सं.90
8. एक जमीन अपनी, चित्रा मुद्गल पृष्ठ. सं.182
9. एक जमीन अपनी, चित्रा मुद्गल पृष्ठ. सं.214
10. अवान्तर कथा, अनामिका, प्रकाशन किताबघर नई दिल्ली, पृष्ठ. सं.87